उत्तराखंड में पशुपालन विभाग और आईवीआरआई का संयुक्त प्रयास: बकरी पालन प्रशिक्षण से किसानों की समस्याओं का समाधान

मुक्तेश्वर, फरवरी 18, 2025 भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आई० वी० आर ० आई०), मुक्तेश्वर द्वारा गोट वैली परियोजना के अंतर्गत पशुपालन विभाग, नैनीताल के सहयोग से दिनांक 18.02.2025 को "पर्वतीय क्षेत्रों में वैज्ञानिक विधि द्वारा बकरी पालन" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नैनीताल जनपद के मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ. धीरेश चंद्र जोशी, वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ. लीलेंद्र जोशी, पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ. चित्रा जोशी और डॉ. पवन सहित कुल 30 किसानों, जिनमें महिला पशुपालक भी बड़ी संख्या में शामिल थीं, ने सहभागिता की। कार्यक्रम की अध्यक्षता संयुक्त निदेशक, आई० वी० आर ० आई० मुक्तेश्वर, डॉ. यशपाल सिंह मलिक ने की, जिन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों में वैज्ञानिक तकनीकों द्वारा बकरी पालन को बढ़ावा देने पर बल दिया। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को बकरी पालन में आधुनिक वैज्ञानिक विधियों की जानकारी दी गई। मुख्य विषयों में पोषण, स्वास्थ्य प्रबंधन, आवास व्यवस्था और रोग नियंत्रण शामिल रहे। विशेषज्ञों में डॉ. अमित कुमार, डॉ. निधि शर्मा और डॉ. आशुतोष फुलार ने अपने व्याख्यान के माध्यम से किसानों को उपयोगी जानकारी प्रदान की। डॉ. मधुसूदनए०पी० द्वारा किसानों को फार्म भ्रमण कराया गया तथा बकरियों में कृमिनाशकों के उपयोग, तापमान मापन आदि का विधि प्रदर्शन किया गया। महिला किसानों ने बकरी पालन में विशेष रुचि दिखाई और अपनी समस्याओं व अनुभवों को साझा किया।

उन्होंने इस प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त नई तकनीकों को अपने व्यवसाय में लागू करने की इच्छा व्यक्त की। इस अवसर पर उत्तराखंड पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. नीरज सिंघल तथा आईसीएआर-आईवीआरआई के निदेशक डॉ. त्रिवेणी दत्त द्वारा भी आईवीआरआई और राज्य पशुपालन विभाग के बीच सहयोग की सराहना की गई, जो पशुधन संबंधी समस्याओं के समाधान में एक महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम के अंत में पशुपालकों से विस्तृत फीडबैक प्राप्त किया गया, जिसमें उन्होंने ऐसे प्रशिक्षण

कार्यक्रमों की संख्या और अवधि बढ़ाने, क्षेत्रीय भाषा में अधिक सामग्री उपलब्ध कराने और व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्रों की संख्या बढ़ाने का सुझाव दिया। इस पर संयुक्त निदेशक महोदय ने पशुपालकों को भविष्य में और अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का आश्वासन दिया।कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक डॉ. आशुतोष फुलार थे, जबकि सह-समन्वयक के रूप में डॉ. नितीश सिंह खड़ायत और डॉ. दीपिका बिष्ट ने भी अपनी भूमिका निभाई। इस अवसर पर अन्य वैज्ञानिक, अधिकारी और कर्मचारीगण भी उपस्थित रहे।